जन्म:-वंचित समाज के महानायक, लेखक, कवि व अपनी ओजस्वी वाणी से वर्चस्वशाली समाज पर प्रहार करने वाले ओमप्रकाश वाल्मीकि जी का जन्म उत्तर प्रदेश के जिला मुजफ्फरनगर के गांव बरला में 30 जनू 1950 को एक दलित (भंगी) परिवार में हुआ। उनके पिता का नाम छोटन लाल व माता का नाम मुकुंदी था। उनकी पत्नी का नाम चंदा था। उनका परिवार तगाओं के घरों में साफ सफाई व बेगारी (बिना मूल्य का काम) का काम करता था। मजदूरी मांगने पर उनके पिताजी को गाली-गलौंज, मार-धाड़ व प्रताड़ना का सामना करना पड़ता था। उनका जन्म एक ऐसे वातावरण में हुआ जहां गलियां तंग हो, लोग नशे व आडम्बरों में फंसे हो, समाज शिक्षा से दूर हो, तथा ऊपर से ऐसी भारतीय सामाजिक व्यवस्था जिसमें किसी दलित की छाया भी छू जाए तो सवर्ण समाज को पाप लगता हो। सामाजिक स्तर पर कोई इंसानी दर्जा उनको प्राप्त नहीं था। वे केवल उपयोग की वस्तु थे इस्तमोल करो और दूर फेंको। ऐसी अमानवीय व्यवस्था में किसी वर्ण व्यवस्था के समर्थक को दो-चार दिन रहना पड़ जाए तो यह व्यवस्था आदर्श न होकर अभिशाप बन जायेगी।

ओमप्रकाश वाल्मीकि जी का साहित्य समाज का दर्पण है:-

साहित्य हमेशा से ही समाज का आईना रहा है। साहित्य ने हमेशा से समाज में वैचारिक क्रांति व चेतना जगाने का काम किया है। वाल्मीकि जी का साहित्य केवल आनंद, धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष के लिए नहीं है अपितु उसमें मानवीय चिंताएं व मानवीय संवेदनाएं भी हैं। मनुष्य के सुख दुख का संघर्ष भी रेखांकित है। ऐसा साहित्य ही समाज का सही-सही आईना बन सकता है। ओमप्रकाश वाल्मीकि जी की साहित्य रचना का केंद्र बिंदु मानव और मानवता रहा है। जो दलित समाज वर्ण-व्यवस्था व जाति भेद के कारण हाशिये पर चला गया तथा धर्म की रूढ़ मान्यताओं के कारण अपमानित, अभावग्रस्त व उपेक्षित रहा उनमें पुन: चेतना जगाने का कार्य समाज के महानायक ओमप्रकाश वाल्मीकि जी ने किया है। अपनी लेखनी की जिस विचारधारा से उन्होंने समाज को जगाया है उसका मूल सद्गुरू कबीर, सद्गुरू रविदास, महात्मा ज्योतिबा फूले व बाबा साहब के द्वारा दलितों के उद्धार के लिए चलाए गए आंदोलन हैं। देहरादून में पढ़ाई के दौरान हेमलाल द्वारा दी गई पुस्तक **''डॉ. अंबेडकर: जीवन परिचय''** का उन पर बहुत प्रभाव पड़ा वे फिर जीवन भर बाबा साहब की विचारधारा से जुड़कर दलित साहित्य के लेखन का कार्य करते रहे। बौद्ध चिंतक भदन्त आनंद कौसल्यायन जी से भी वे मिलते हैं। इसके बाद उन पर बुद्ध के मानवीय स्वतंत्रता के विचार गहरी पैठ बनाते हैं। फिर वे अपनी लेखनी से उन्हीं विचारों को आधार बनाकर दलितों के उत्पीड़न का कारण व सामाजिक कुरीतियों का भंडाफोड़ अपने साहित्य में करते हैं। उन्होंने अपनी आलोचना में दर्शाया है कि दलित साहित्य किसी समूह, किसी जाति विशेष संप्रदाय के खिलाफ नहीं है लेकिन उस व्यवस्था के खिलाफ है जो दलितों को मानव का भी दर्जा नहीं देती। वे ऐसी आर्थिक, सामाजिक व धार्मिक व्यवस्था के खिलाफ हैं जो दलितों का शोषण व दमन करती है। उनकी लेखनी तथागत बुद्ध, कबीर, रविदास, ज्योतिबा फूले और बाबा साहब के विचारों के संघर्ष को लेकर यहां तक पहुंची है। उनकी कुछ रचनाएं हैं जिन्हें समाज को पढ़ना चाहिए वह अपनी चेतना को जगाना चाहिए।

उनकी कुछ रचननाएं व पुरस्कार

कविता संग्रह:- सदियों का संताप, बस बहुत हो चुका
अब और नहीं, शब्द झूठ नहीं बोलते।
कहानी सग्रंह-सलाम, घुसपैठिये, छतरी, अम्मा एन्ड अदर स्टोरीज
आत्मकथा-जूठन (अनेक भाषाओं में अनुवाद)
नाटक-दो चेहरे, आलोचना-दलित साहित्य का सौंदर्य शास्त्र
मुख्यधारा और दलित साहित्य, सफाई देवता
अभिनय-60 से अधिक नाटकों में अभिनय, मंचन व निर्देशन।
पुरस्कार -डॉ. अंबेडकर पुरस्कार-1993

परिवेश सम्मान-1995	**जयश्री सम्मान-1999**
कथाक्रम सम्मान-2001	**न्यू इंडिया बुक प्राइज-2004**
विश्व हिन्दी सम्मेलन-2007	**न्यूयॉर्क अमेरिका सम्मान साहित्य सम्मेलन-2008**

''जूठन'' आत्मकथा भारतीय वर्ण व्यवस्था से उपजी अछूत जाति का एक वो दस्तावेज है जो दलित जीवन के यथार्थ को पूरी दुनिया के सामने खोलकर रख देता है।

वाल्मीकि जी का धर्म व संस्कृति पर प्रहार:-

एक ऐसी संस्कृति जो मानव-मानव में भेद करे, एक को श्रेष्ठ तथा दूसरे को नीचे करे, ऐसी संस्कृति महान कैसे हो सकती है। और धर्म पाप-पुण्य, भाग्य, कर्म फल, स्वर्ग-नरक का भय दिखलाकर ऐसी सस्कृति से जोड़ने का कार्य करे वह धर्म नहीं कुधर्म है। वाल्मीकि जी अपनी कविता **'विरासत'** में कहते हैं कि हम खेत जोतते हैं, फटे जूते सीलते हैं, सड़क साफ करते हैं, यहां तक की आपके घर में लगा गारा, लोहा, सीमेंट सब पर हमारा स्पर्श है। फिर भी आपने हमें अस्पृश्य भंगी, डोम, चमार, पासी और महार बना दिया, हमें नीच बना दिया, जिनको छूने से भी पाप लगता हो, तो क्या यही सभ्यता तथा संस्कृति की देन है। वाल्मीकि जी ऐसी सस्कृति पर व्यग्यात्मक प्रहार करते हुए कहते हैं:-

छूना भी जिन्हें पाप, हिस्से में जिनके सिर्फ
उपेक्षा और उत्पीड़न, जाति कही जाए जिनकी नीच
आप बता सकते हैं, यह किस सभ्यता और संस्कृति की देन है।

धर्म के विषय में वाल्मीकि जी कहते हैं कि ऐसा धर्म, संस्कृति से तो हमें बांधे रखना चाहता है लेकिन वह धर्म कभी हमारा हुआ नहीं।

मेरी इस असमर्थता में, बहुत बड़ा हाथ था
मेरे धर्म का, जो मुझे बांध कर तो चाहता है
रखना, लेकिन वह मेरा, कभी नहीं हुआ।

वाल्मीकि जी का वर्ण व्यवस्था व पाखंड पर प्रहार:-

ओमप्रकाश वाल्मीकि जी की लेखनी का केंद्र बिंदु मानव रहा है। सभी मानव समान हैं। लेकिन किसी एक वर्ग को सामाजिक श्रेष्ठता प्रदान करने वाली इस वर्ण व्यवस्था ने लेखक के मन को झकझोर कर रख दिया है। अपनी कविता **'श्रेष्ठ'** में वाल्मीकि जी कहते हैं कि मनुष्य का जन्म तो माता के गर्भ से होता है फिर ये ब्रह्मा के मुख से कैसे पैदा हो गए।,

मनुष्य का जन्म तो होता है, सिर्फ मां के गर्भ से, फिर आप कैसे पैदा हो गए।
ब्रह्मा के मुख से, संत कबीर का भी मत यहां द्रष्टव्य।
जै तू ब्राह्मण ब्राह्मणी का जाया। तो और राहे क्यों नहीं आया।।

'वह दिन कब आएगा' कविता शीर्षक में ओमप्रकाश वाल्मीकि जी पूछना चाहते हैं कि वह दिन कब आएगा जब बामणी नहीं जन्माएगी बामन, भंगिन नहीं जन्माएगी भंगी, चमारी नहीं जन्माएगी चमार। यानी सभी मानव कहलाएंगे। वह दिन कब आएगा जब शम्बूक नहीं मारा जाएगा, एकलव्य का अगूंठा नहीं कटेगा। कवि पछूता है:-

वह दिन कब आएगा, जब बामणी नहीं जनेंगी बामण
चमारी नहीं जनेंगी चमार, भंगिन नहीं जनेंगी भंगी
तब नहीं चुभेंगे, हीनता के दंश।।

ओमप्रकाश वाल्मीकि जी ने दलितों की इस स्थिति का कारण वर्ण व्यवस्था व पाखंड को ही माना है। अपने पराये का भेद यही वर्ण व्यवस्था करवाती है। इस वर्ण व्यवस्था के दर्शन आज भी समाज में मौजूद हैं। हाल ही में जेलों में कैदियों के काम का बंटवारा भी जाति आधारित होना पाया गया है। इसी व्यवस्था के पोषक लोगों को सचेत करते हुए वाल्मीकि जी कहते हैं:-

कभी सोचा है, गंदे नाले के किनारे बसे
वर्ण व्यवस्था के मारे लोग, इस तरह क्यों जीते हैं?
तुम पराये क्यों लगते हो उन्हें, कभी सोचा है।

'तुम्हारी गौरवगाथा' कविता में पाखंड पर चोट करते हुए वाल्मीकि जी कहते हैं तुम्हारी गौरव गाथा सुनकर मेरे बाजू क्यों नहीं फड़कते? तुम्हारी संस्कृति पराई क्यों लगती है? दिल में आस्था क्यों नहीं जगाती? तुम्हारी पत्थर की मूर्तियों को हमने गढ़ा है। प्राण प्रतिष्ठा के बाद भी मूर्तियों में देवता क्यों नहीं जागृत होते? भूखे मरते लोग, अत्याचार व जाति का दंश सहते लोगों पर आपका देव असहाय क्यों हो जाता है? भूखे बच्चों से दूध छीनकर क्यों नालियों में बहा दिया जाता है? इस व्यवस्था के कारण हम भिखारी व कंगाल बन गए हैं जो कि सभ्य समाज के लिए चिंतन का विषय है।

न जाने कितना दूध, बहा दिया तुमने नाली में, भूखे बच्चों से छीन कर अरे
तुम्हारे इन्हीं कुकर्मों ने हमें, कंगाल बना दिया है।

ओमप्रकाश वाल्मीकि जी इस पर सवर्ण समाज को सचेत करते हुए कहते हैं यदि युगों-युगों तक तुम्हें ऐसे रहना पड़ जाता तो तुम भी इसे पाखंड कहते। तुम भी कागज पर नहीं लिख पाते 'सत्यम शिवम सुदंरम'। नहीं कहते कि हम देवी देवताओं व ऋषियों के वंशज हैं। क्या ऐसा कभी आपने सपने में भी सोचा है?

अधमरा लोकतंत्र:-इस अन्यायकारी सामाजिक व्यवस्था में जब दलितों के लिए शिवालय के कपाट नहीं खुले न ही किसी जड़ मूर्ति में चेतना जगी, तब कवि कहता है जब दलित बालिग होकर मतदाता सूची में अपना नाम लिखवाते हैं कि लोकतंत्र से हमें उन्नति का रास्ता मिलेगा वहां भी उन्हें निराशा ही हाथ लगती है। क्योंकि इस अन्यायकारी व्यवस्था के पोषक लोग इसमें भी घुसपैठिये की तरह घुस आये हैं। इस लोकतंत्र को भी अधमरा कर दिया है। पूंजीवादी व्यवस्था हावी हो चुकी है। मारा-मारी, पालों की अदला-बदली इस लोकतंत्र में आम बात हो चुकी है। कवि इस व्यवस्था पर चोट करते हुए कहते हैं:-

पालों की अदला-बदली, संसद के गलियारों का, अधमरा लोकतंत्र भी
न अपना हो सका, न जगा सका, विश्वास ही।

'**झाड़ूवाली**' शीर्षक कविता से लेखक ने इस लोकतंत्र में नारी शक्ति को भी सम्मान देने की बात कही है। जब तक रामेश्वरी जैसी महिलाओं के हाथ में झाड़ू रहेगी तब तक देश का लोकतंत्र मानो एक गाली है। इस पर कवि ओमप्रकाश वाल्मीकि जी कहते हैं–

साल-दर-साल गुजरते हैं, दीवारों पर चिपके चुनावी पोस्टर
मुंह चिढ़ाते हैं।, जब तक रामेश्वरी के हाथों में, खड़ाग-रवांग घिसती गाड़ी
है मेरे देश का लोकतंत्र, एक गाली है।

कलम की ताकत, समाज का सकारात्मक पक्ष:-

समाज की जिस विषमकारी परिस्थितियों में वाल्मीकि जी पैदा हुए तथा सामाजिक प्रताड़ना सहते हुए अपने जीवन काल में हर दिन विभिन्न युद्धों से लड़े फिर भी वे हताश न होकर अपनी कविता '**अच्छा ही हुआ**' में कहते हैं कि यह सब अच्छा ही हुआ कि मैं उच्च वर्ग में न जन्मा, वरना मुझे भी संवेदनहीन होना पड़ता तथा हमें भी अपने बच्चों के कानों में यह जात-पात का जहर घोलना पड़ता। अच्छा ही हुआ वरना मैं भी ब्रह्मा के मुख से पैदा होकर अपनी श्रेष्ठता का दंभ भरता। मैं इस पाखंड से बच गया। यह अच्छा ही हुआ की मेरे माता-पिता मरते-मरते झाड़ू के बदले मेरे हाथों में कलम थमा गए। जिससे मैं समाज की मुक्ति का घोषणा पत्र लिख सकता हूँ। कवि कहता है:-

मरते मरते मेरा बाप, थमा गया, मेरे हाथ में कलम, झाड़ू की जगह
कालग्रस्त अंधेरों की सिसकियां, और मुक्ति का घोषणा पत्र,
लिखने के लिए, अच्छा ही हुआ, मैं नहीं जन्मा, उच्चवर्गीय मां के गर्भ से

वाल्मीकि जी '**शम्बकू का कटा सिर**' कविता में कहता है यहां गली-गली में राम है, शम्बूक है, द्रोण है, एकलव्य है। कवि इस बात का सकारात्मक पक्ष रखता है कि शम्बूक का खून जमीन के अंदर समा गया है एक दिन वह ज्वालामुखी बनकर फटेगा। कवि कहता है–

शम्बूक तुम्हारा रक्त जमीन के अंदर, समा गया है जो किसी भी दिन
फूटकर बाहर आएगा, ज्वालामुखी बनकर।

चुप्पी तोड़ो:-तथागत बुद्ध से लेकर बाबा साहब तक अनेक महापुरुषों ने समाज में चेतना जगाने का कार्य किया। लेकिन न ही सवर्ण समाज जाति भेद को भूला पाया न ही अवर्ण समाज अपनी चेतना को जगा पाया। इस पर वाल्मीकि जी कहते हैं पत्थर पर भी हथोड़ा पड़ने पर उसमें चिंगारी निकल आती है तुम में तो चेतन तत्व है फिर भी तुम्हारी चेतना जाग नहीं रही है। किसी भी प्रकार का बदलाव उनको नजर नहीं आ रहा है। वे अपनी कविता में कहते हैं:-

पथरीली चट्टान पर, हथौड़ों की चोट, चिंगारी को जन्म देती है
जो गाहे-बगाहे आग बन जाती है।, आग में तप कर, लोहा नर्म पड़ जाता है
ढल जाता है।, मनचाहे आकार में, हथौड़ों की चोट से।, एक तुम हो
जिस पर किसी चोट का, असर नहीं होता।

ओमप्रकाश वाल्मीकि जी '**चुप्पी टूटेगी**' अपनी कविता में कहते हैं कि शोषितों को इस चुप्पी को तोड़ना होगा वरना गरीब दलित का जीना मुश्किल हो जाएगा। वे कहते हैं जितना इस व्यवस्था पर चुप रहोगे उतने ही बेदर्दी से मारे जाओगे। वाल्मीकि जी कहते हैं जो बच्चे अभी इस दुनिया में नहीं आए हैं उनको आप बचाने की कोशिश करो अर्थात आने वाली पीढ़ी का रास्ता जाति विहीन करो। अगर आपकी चुप्पी टूटेगी तो वह आपका दस्तावेज बनेगी। वही दस्तावेज आने वाली पीढियों के लिए इतिहास बनेगा। आने वाली पीढ़ियां तुम्हारी कहानियां सुनेंगी और गौरवगाथा गायेंगी।

वे गर्वित होंगे, बड़े-बूढों से सुनकर तुम्हारी कहानियां
लंबी-लंबी रातों में, पुआल के भीतर दुबक कर।

निष्कर्ष:-आज तथागत बुद्ध, सतं कबीर, सतं रविदास, महात्मा ज्योतिबा फूले व बाबा साहब अंबेडकर का समाज हाशिये पर है। जातिवादी मानसिकता के कारण उन्हें अपनी उन्नति का पूरा अवसर नहीं मिल पा रहा है। ठेका प्रथा ,पूंजीवाद, धर्म की रूढ़ मान्यताएं उनको हाशिये पर रखने का कार्य कर रही है। वहीं दलित भी अज्ञानता की चादर ओढ़ कर सो रहा है वो अपने महानायकों की विचारधारा को नहीं समझ पा रहा है। जिस समाज में योग्यता का आधार जाति हो, तथा जातिगत श्रेष्ठता समाज में महत्वपूर्ण कारक बन गई हो, और सब गुण धनवान में समाहित होने लगे हों, तब उनको समाप्त करने की लड़ाई एक दिन में नहीं लड़ी जा सकती। लगातार विरोध व संघर्ष इसके लिए जरूरी है। और वह विरोध केवल राजनीतिक न हो उसके लिए समाज में आंतरिक सहभागिता व परिवर्तन जरूरी है ताकि समाज में बदलाव हो सके।

बाबा साहब इसी बदलाव के लिए अपने जीवनकाल में संविधान निर्माण से पूर्व व संविधान लागू कराने के उपरांत भी शोषितों, दलितों व महिलाओं की अस्मिता, स्वतंत्रता व मानवीय अधिकारों की लड़ाई लड़ते रहे। उनके संघर्ष के परिणाम स्वरूप ही शोषित समाज के अधिकार सुरक्षित हो सके। लेकिन आंतरिक बदलाव के लिए संघर्ष अभी भी जारी है। ओमप्रकाश वाल्मीकि जी की साहित्य रचना का प्रकाशन व घर-घर उसका वितरण ही शोषित लोगों के लिए पुर्नजागरण का कार्य कर सकता है। वाल्मीकि जी दलित चेतना के सच्चे संवाहक हैं। क्योंकि उन्होंने भारतीय सामाजिक व्यवस्था के यथार्थ चित्रण को व्यक्त करने में महत्वपूर्ण कार्य किया है। साहित्य वितरण का कार्य सशक्त भीम समाज के कर्मठ साथी बड़े उत्साह से कर रहे हैं। ऐसे कर्मठ साथियों व ओमप्रकाश वाल्मीकि जैसे महानायक को कोटि-कोटि नमन।

नमो बुद्धाय
भवतु सब्ब मंगलम

अत्त दीपो भव

SOCIAL ACTION GROUPS FOR AMBEDKARITE REFORM (SAGAR)
Office : 106, Sector-21B, Faridabad, Haryana

Printed By : Mansi Digital Graphic, Ballabgarh, Faridabad, Haryana

महानायक ओमप्रकाश वाल्मीकि जी का सामाजिक संदेश

नाम	:	ओमप्रकाश वाल्मीकि
जन्म	:	30 जून 1950
पिता	:	श्री छोटन लाल
माता	:	श्रीमती मुकुन्दी
जन्म स्थान	:	गाँव बरला, जिला मुजफ्फनगर (उत्तर प्रदेश)
शिक्षा	:	स्नातकोत्तर (हिन्दी)
परिनिर्वाण	:	17 नबम्बर 2013